कद्दू होटल

मरिको शिंजो

कद्दू होटल

मरिको शिंजो

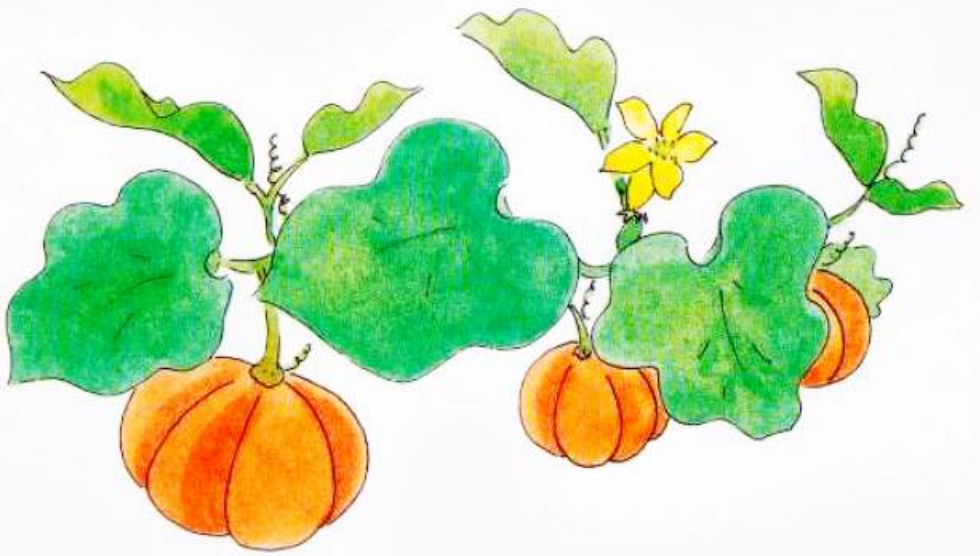

बहुत पुराने समय की बात है. एक बंजर पहाड़ी गाँव में एक गरीब आदमी रहता था. एक दिन, पहाड़ी रास्ते पर, उसे कद्दू के कुछ बीज पड़े मिले. क्योंकि कद्दू से, भोजन के साथ-साथ अन्य चीज़ें भी बनाई जा सकती थीं इसलिए उसने उन बीजों को बोया. वो आदमी यह देखकर हैरान हुआ कि वे बीज कितनी तेजी से और कितने जल्दी बड़े हुए. शुरू में उसने कद्दू का उपयोग सूप बनाने के साथ-साथ सूप के कटोरे और कप बनाने के लिए किया. लेकिन, जैसे-जैसे कद्दू बड़े, और बड़े होते गए, वो आदमी बड़ी-और-बड़ी चीजें बनाने में सक्षम हुआ - कद्दू का पलंग, कद्दू का स्नान टब और अंत में एक कद्दू का घर! कुछ समय बाद उसके पास इतने कद्दू हो गए कि उसने अपने कद्दुओं और उनके बीजों, दोनों को, गांव के सभी लोगों में बांटा.

कहानी की सीख यह है कि हमें प्रकृति के साथ सद्भाव से रहना चाहिए और प्राकृतिक चीज़ों का उपयोग करना चाहिए. उपयोग के बाद हमें उन वस्तुओं को प्रकृति को वापस लौटा देना चाहिए. तभी प्राकृतिक प्रक्रिया का चक्र पूरा होगा.

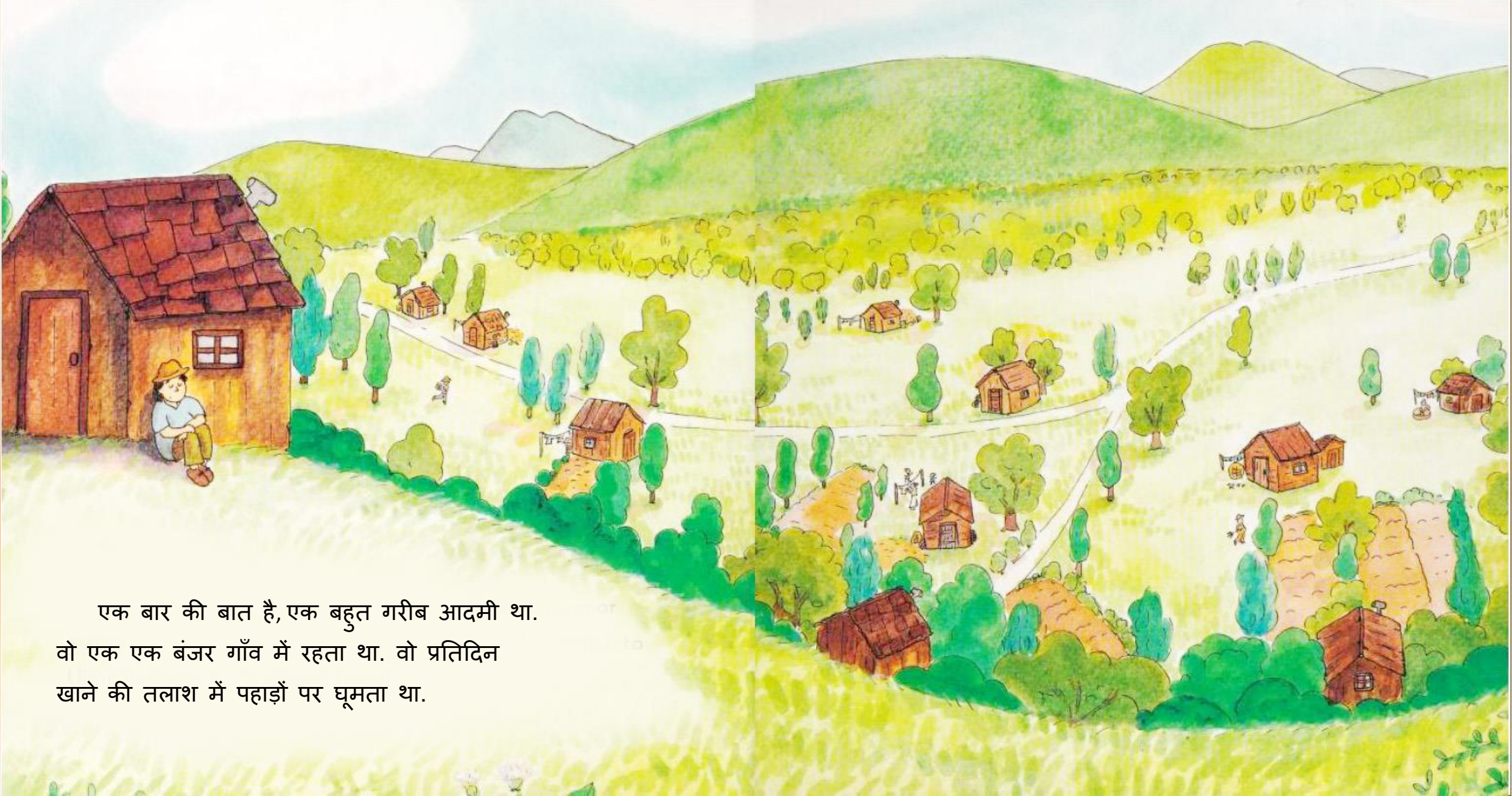

एक बार की बात है, एक बहुत गरीब आदमी था. वो एक एक बंजर गाँव में रहता था. वो प्रतिदिन खाने की तलाश में पहाड़ों पर घूमता था.

एक दिन, वो पहाड़ी रास्ते पर चल रहा था. अचानक उसने जमीन पर पड़े कुछ बीज देखे. "अरे!" उसने कहा, "वो तो कद्दू के बीजों की तरह दिखते हैं." फिर उसने एक मुट्ठी बीज उठाए और उन्हें अपने घर ले गया. उसने उन बीजों को अपने छोटे से घर के आसपास के खेतों में बोया.

वो हर दिन बीजों को पानी देता था. बीजों में जल्द ही नए अंकुर निकले और नई पत्तियां निकलीं जो तेज़ी से बढ़ीं. पौधे भी तेजी से बढ़े, और उनमें जल्द ही छोटे-छोटे कद्दू दिखाई देने लगे.

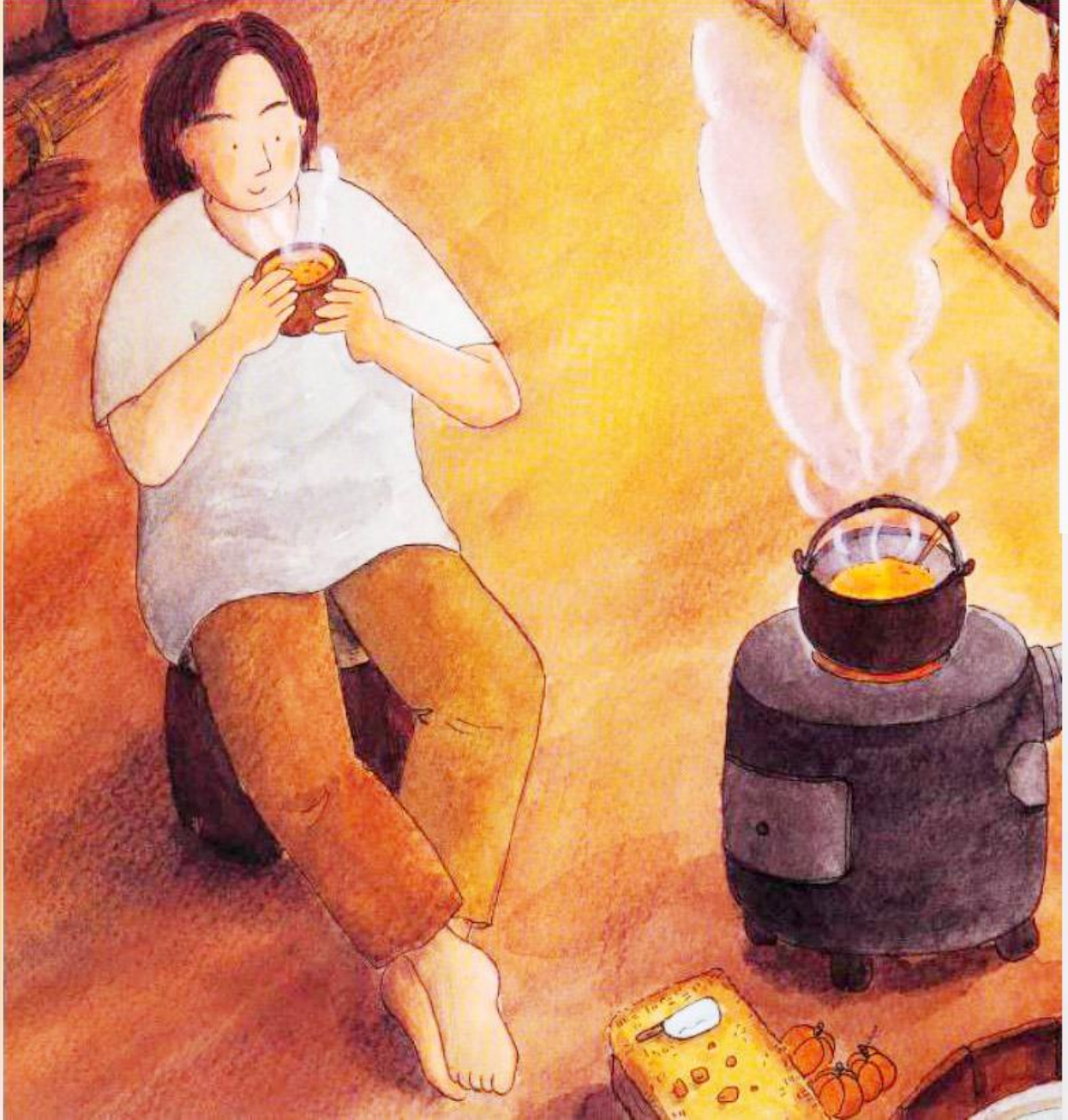

बड़ी कृतज्ञतापूर्वक, उसने कद्दू इकट्ठे किए. उसने उनके बीज निकाले, और गूदे से खाने के लिए गर्म कद्दू का सूप बनाया. अगले दिन उसने खेतों में कुछ और बीज बोए. वो उन्हें प्रतिदिन पानी देता था. कद्दू तेजी से बढ़ने लगे.

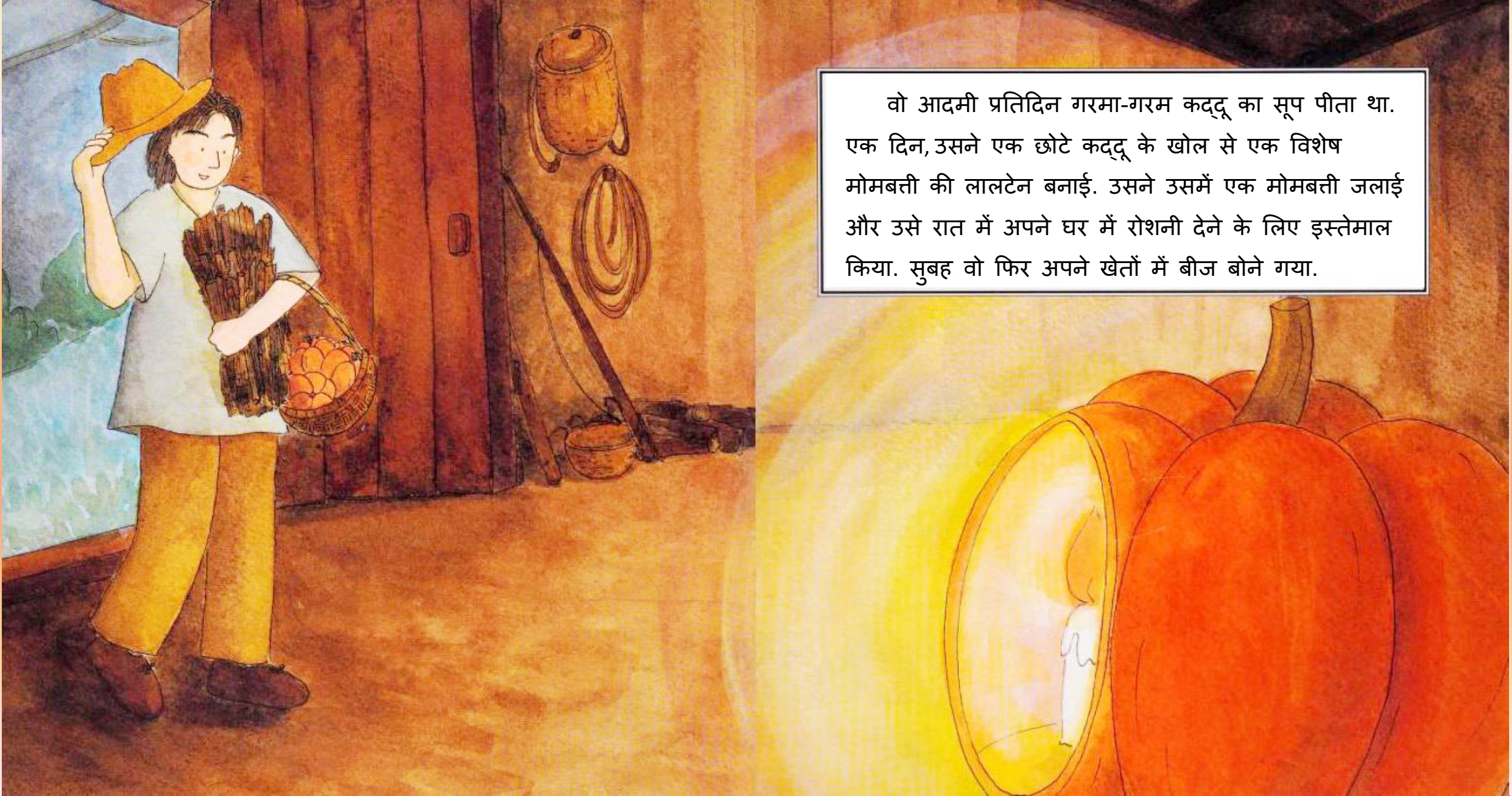

वो आदमी प्रतिदिन गरमा-गरम कद्दू का सूप पीता था. एक दिन, उसने एक छोटे कद्दू के खोल से एक विशेष मोमबत्ती की लालटेन बनाई. उसने उसमें एक मोमबत्ती जलाई और उसे रात में अपने घर में रोशनी देने के लिए इस्तेमाल किया. सुबह वो फिर अपने खेतों में बीज बोने गया.

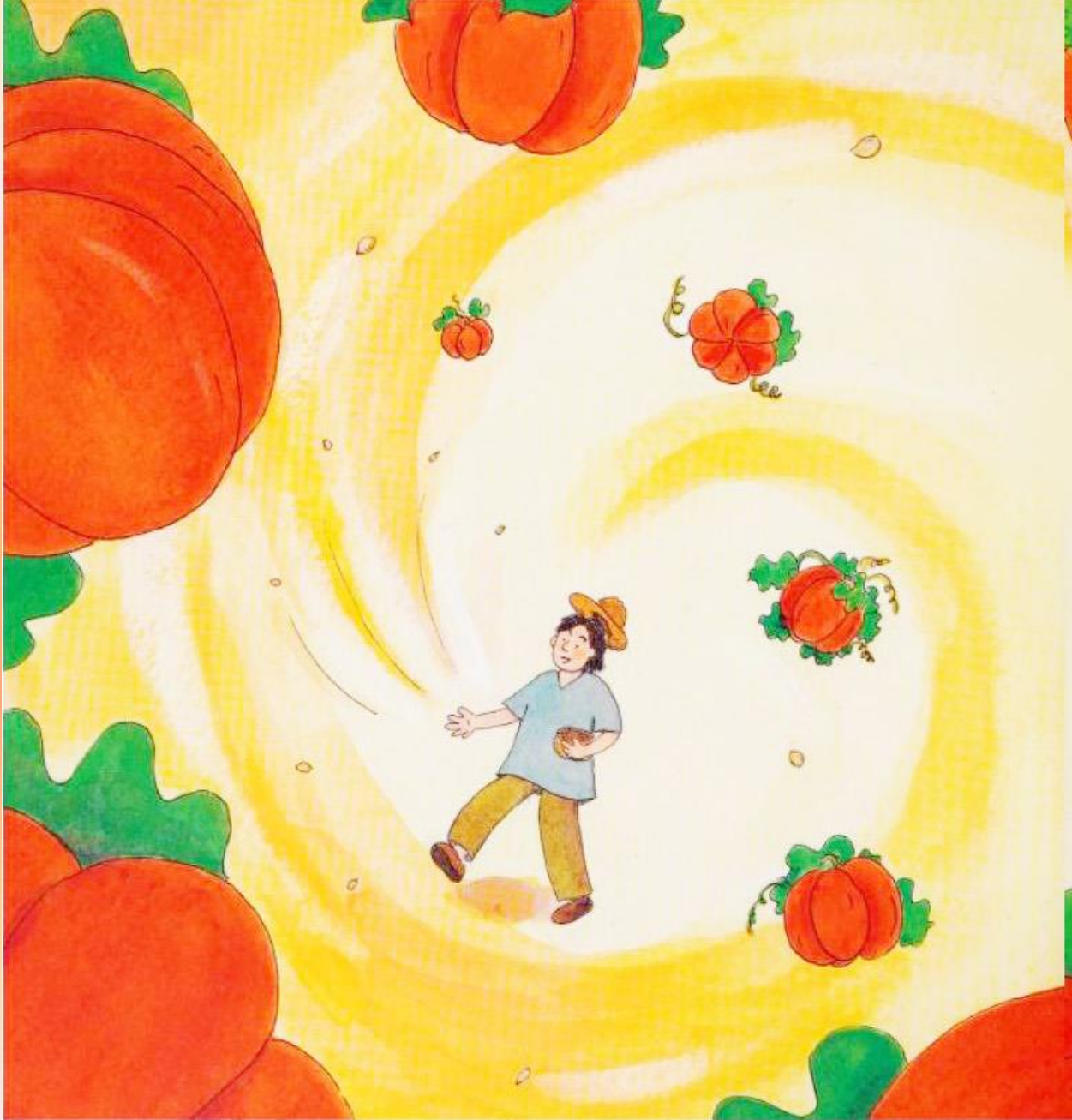

हर बार जब वो नए बीज बोता तो उसके कद्दू बड़े, और बड़े होते जाते थे. और प्रत्येक बेल पर अधिक से अधिक कद्दू उगते थे. कद्दुओं का आकार जल्द ही उसके सिर से बड़ा हो गया था!

वो जल्द की कद्दुओं के खोलों से अन्य उपयोगी चीजें बनाने लगा. वो कद्दुओं के गूदे को बाहर निकालकर फिर उनके खोलों को बर्तन, सूप के कटोरों और कप बनाने के लिए सुखाता था.

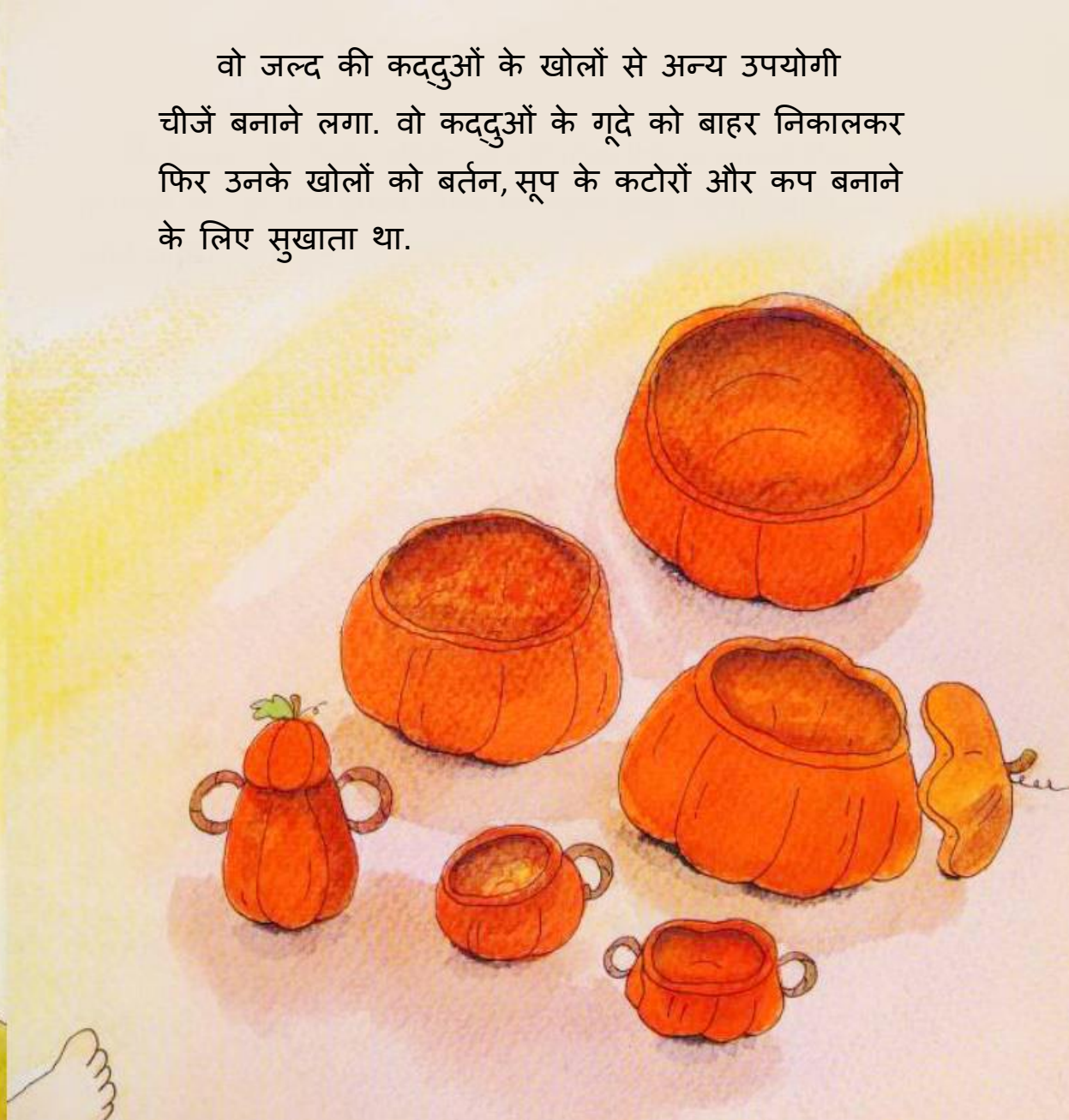

धीरे-धीरे उसके कद्दू बड़े और बड़े होते गए. उसने एक कद्दू का पलंग और एक कद्दू के स्नान टब बनाया. अंत में, उसने एक कद्दू का एक घर भी बनाया! वो घर अनेकों सुंदर चीजों से भरा था. और वो सभी चीज़ें कद्दू की बनी थीं ....

जब उसकी अपनी जरूरतें अच्छी तरह से पूरी हो गईं तब उसने कद्दू के बीज, गांव के अन्य लोगों को दिए. वे लोग भी गरीब और भूखे थे, इसलिए वे नए कद्दू के भोजन, बर्तनों और कद्दू के घरों से बहुत खुश हुए.

जल्द ही गाँव के सभी लोग कद्दू के घरों में रहने लगे. शुक्र था कि कद्दू बड़े और बड़े होते गए, और उनसे लोगों का पेट भरता रहा.

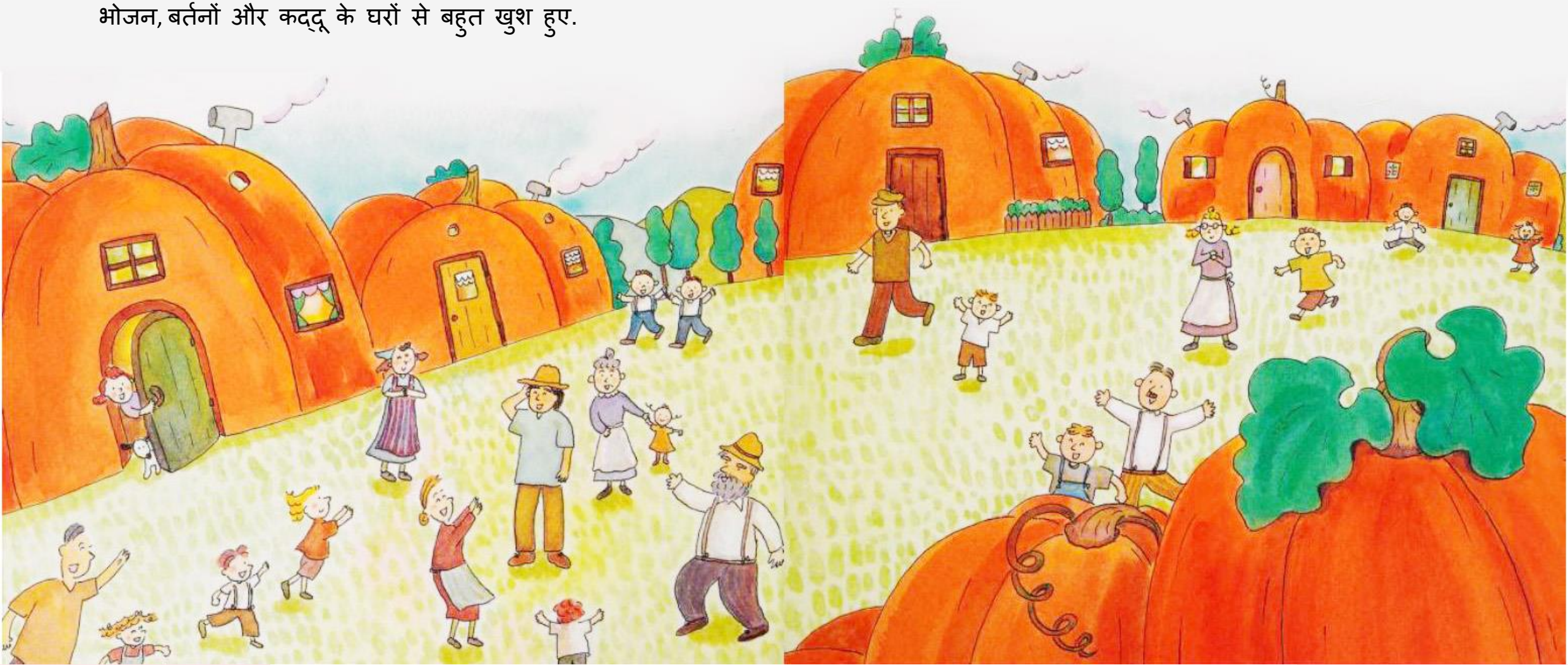

तब सभी गांववालों ने एक साथ मिलकर अपने सबसे विशाल कद्दू से एक "कद्दू होटल" बनाने का फैसला किया. उन्होंने एक विशाल कद्दू के अंदरूनी भाग को बाहर निकालने के लिए कड़ी मेहनत की. दूसरे लोगों ने कद्दू के सुरुचिपूर्ण फर्नीचर बनाए. सभी लोगों को "कद्दू होटल" के उद्घाटन का बड़ी बेसब्री से इंतजार था. . . .

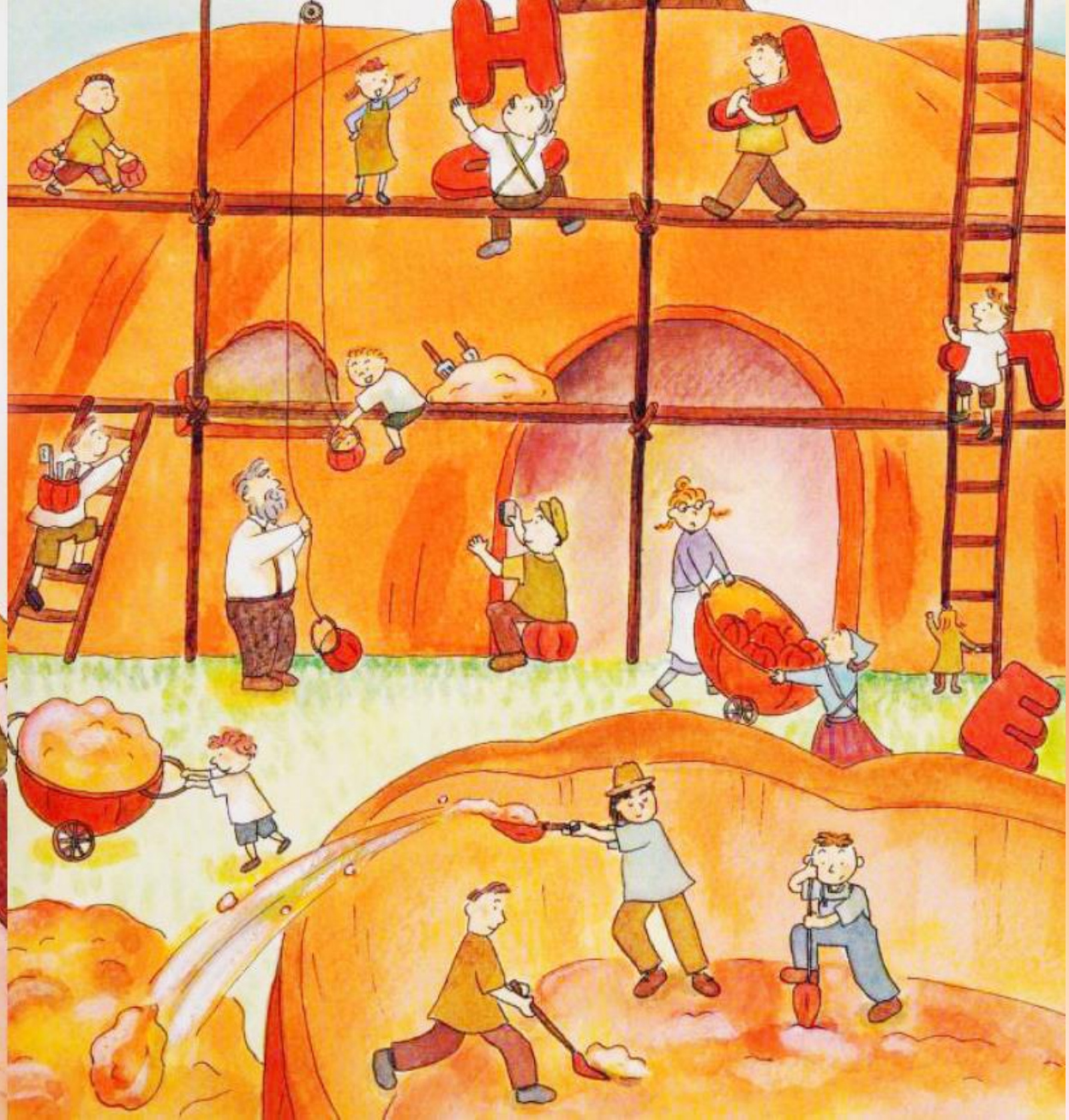

जल्द ही वो बड़ा दिन आया. दूर-दूर से लोग कद्दू होटल में ठहरने के लिए आए. कुछ ही समय में वो गाँव "कद्दू गाँव" के रूप में जग-प्रसिद्ध हो गया.

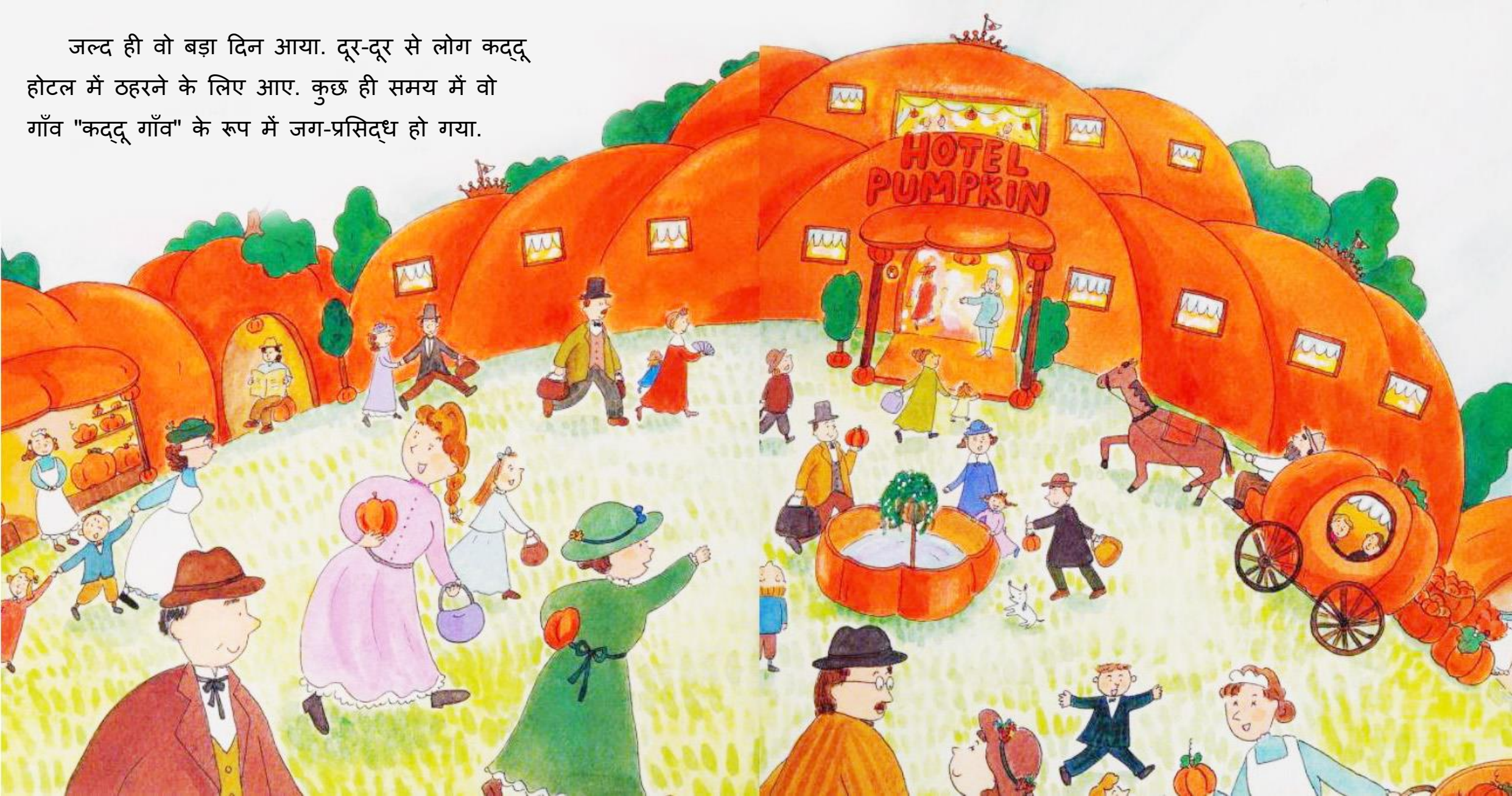

जब माता-पिता कद्दू बैंड के संगीत कार्यक्रम का आनंद
लेते होते, तब उनके बच्चे कद्दू पूल में तैरते और खेलते होते.

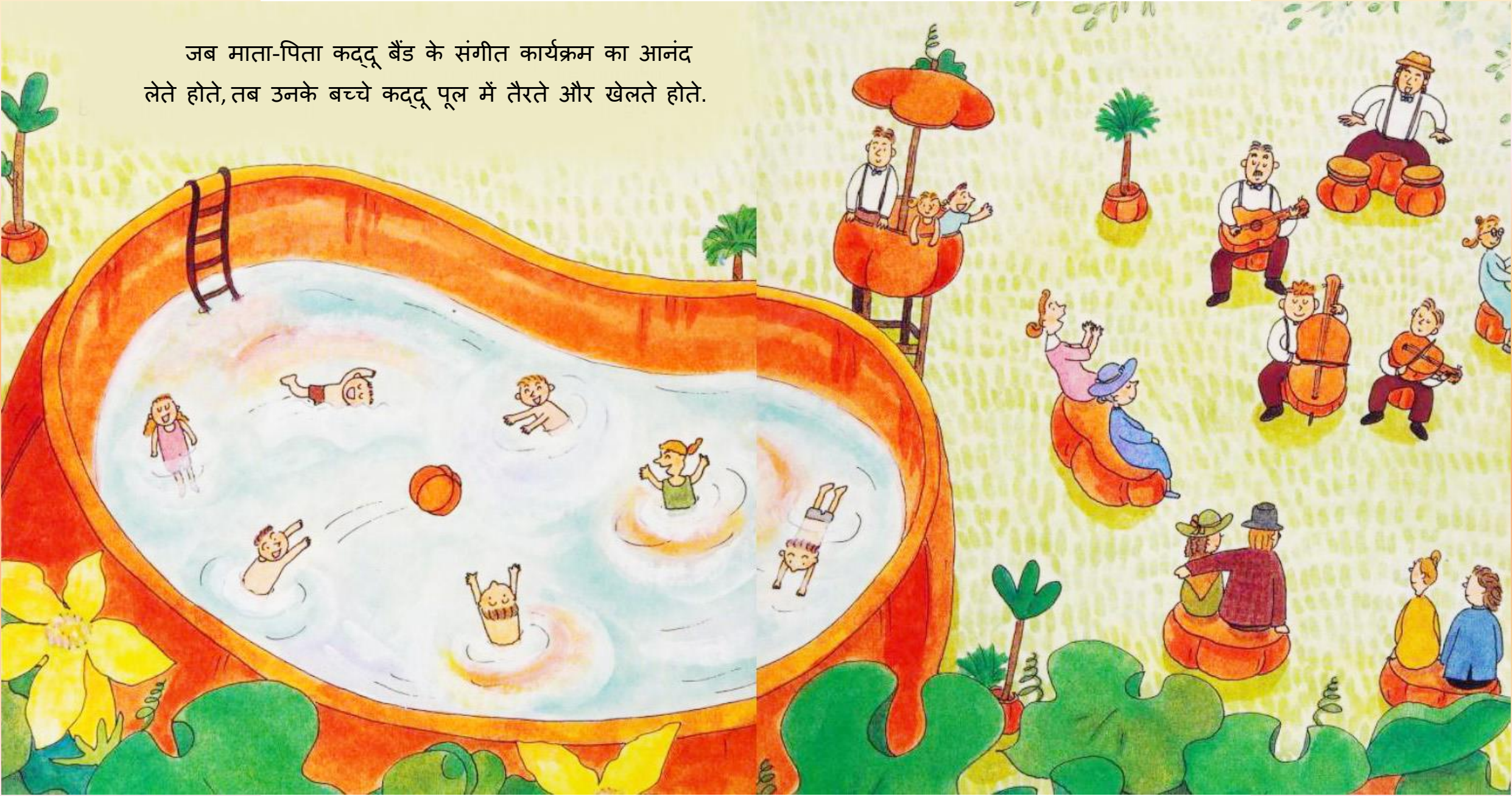

हरेक दिन के अंत में, सभी पर्यटक विशेष कद्दू का हलवा, स्वादिष्ट कद्दू मिठाई, कद्दू की रोटी और प्रसिद्ध कद्दू का सूप पीते थे!

कद्दू के पलंगों पर सोने से पहले सभी कद्दू टबों में स्नान का आनंद लेते थे.

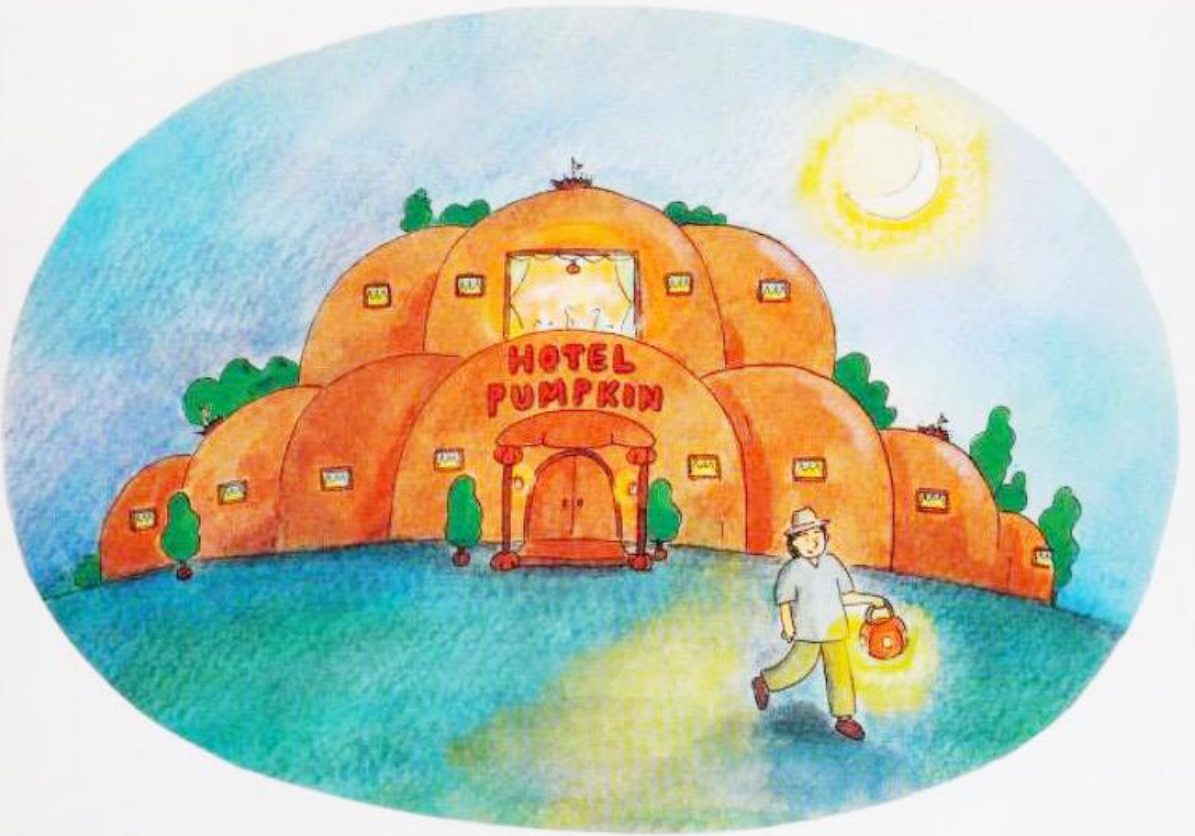

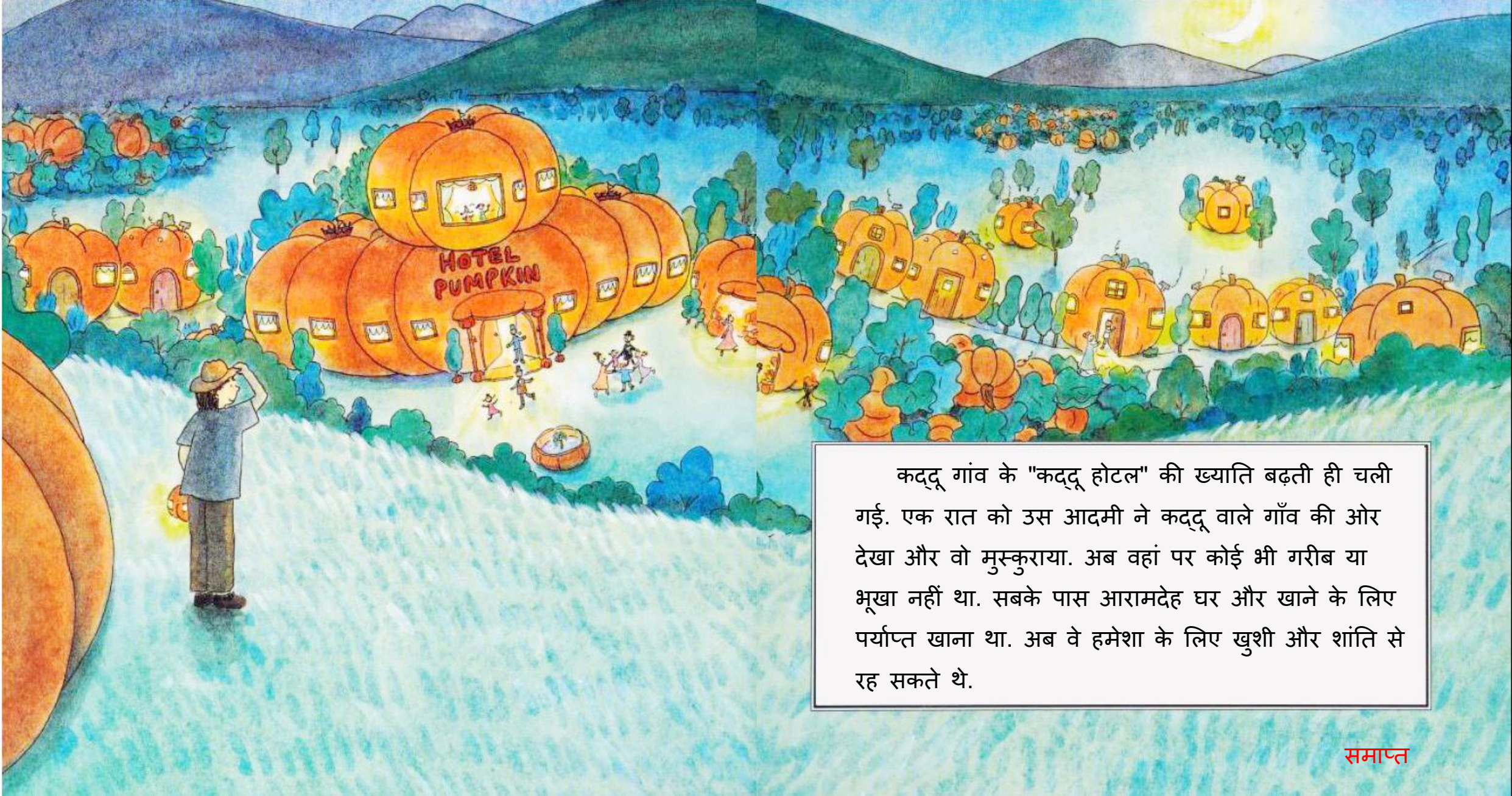

कद्दू गांव के "कद्दू होटल" की ख्याति बढ़ती ही चली गई. एक रात को उस आदमी ने कद्दू वाले गाँव की ओर देखा और वो मुस्कुराया. अब वहां पर कोई भी गरीब या भूखा नहीं था. सबके पास आरामदेह घर और खाने के लिए पर्याप्त खाना था. अब वे हमेशा के लिए खुशी और शांति से रह सकते थे.

समाप्त